# U R

## WELCOME TO

## BABY BULLET DIGI WORLD

**SOLVED**
**PRACTICE PAPER-1**

# PRACTICE PAPER -1

Time: 3 hrs **SR.SANSKRIT** Max. Marks: 100

**I. एकस्य श्लोकस्य प्रतिपदार्थ भावं लिखत ।** $1 \times 8 = 8$

अ) दुर्बलस्य बलं राजा, बालानां रोदनं बलम् ।
बलं मूर्खस्य मौनित्वं, चोराणाम् अनृतम् बलम् ।।

आ) अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतस्सुखम् ।।

**II. एकं निबन्धप्रश्नं समाधत्त ।** $1 \times 6 = 6$

अ) विष्णुभक्तः अम्बरीषः इति पाठ्भागस्य सारांशं सङ्ग्रहेण लिखत ।

आ) ''कृष्णाप्रबोधः'' इति पाठ्यभागस्य सारांशं सङ्क्षेपेण लिखत ।

**III. एकं निबन्धप्रश्नं समाधत्त ।** $1 \times 6 = 6$

अ) शतानन्देनोक्तं विश्वामित्रचरितम् समालिखत ।

आ) 'दयावीरो विक्रमः' इति पाठ्यभाग सारांशं लिखत ।

**IV. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।** $3 \times 2 = 6$

अ) काव्येषु किं रम्यम् ?

आ) शकुन्तला आश्रमात् क्व याति ?

इ) महाभागः कौत्सः कीदृशः ?

ई) प्रतिग्रहः केषां न शोभते ?

उ) पथिकः केन श्रान्त :?

ऊ) निः स्पृहस्य तृणं किम् ?

**V. द्वयोः ससन्दर्भं व्याख्यात ।** $2 \times 3 = 6$

अ) विश्वं येनेदं लोष्ठवत् स्मृतम् ।

आ) रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः ।

इ) गभस्तिमान् नैव सहिष्णुभावः ।

ई) आह्लादयत्येव हि केतकस्य ।

BABY BULLET-Q AP

**VI. द्वयोः ससन्दर्भं व्याख्यात ।** **2 × 3 = 6**

अ) आरोपयामास दिवं त्रिशङ्कुम् ।

आ) न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः।

इ) आश्रितत्यागी नारकी स्यादिति न खलु ।

ई) चतुर्भिरपि पदैस्सुकृतं स्थिरीकृतम् ।

**VII. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।** **3x2=6**

अ) अम्बरीषः किं व्रतं दधार?

आ) वनेचरः कां वेदितुम् अयुङ्क्त ?

इ) कथं मित्राणि रिपवः जायन्ते ?

ई) गीर्वाणभारती कीदृशी ?

उ) ग्रीष्मर्तौ जगत् कथं बभूव ?

ऊ) हारावलौ नरेन्द्रः कीदृशः ?

**VIII. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।** **3 × 2 = 6**

अ) विश्वामित्रचरितम् इत्ययं पाठ्यभागः कस्मात् सङ्गृहीतः ?

आ) पक्षिणो वचः श्रुत्वा राजा कुत्र गतः ?

इ) ''लक्ष्मीचाञ्चल्यम्'' इति पाठ्यांशः कस्मात् सङ्गृहीतः ?

ई) गुणवन्तं कीदृशम् इव न स्पृशति ?

उ) भारतसङ्ग्रहः केन विरचितः ?

ऊ) गद्यनैषधं कस्मात् स्वीकृतम् ?

**IX. एकेन पदेन समाधेयः ।** **5 × 1 = 5**

अ) मधुवने कः अतिथिः अभूत् ?

आ) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपनीः गिरः का उदाजहार ?

इ) कः सर्वत्र पूज्यते ?

ई) सान्द्रघनावृतः ऋतुः कः?

उ) नरेन्द्रः किं चकमे ?

BABY BULLET-Q AP

**X. एकेन पदेन समाधेयः ।** **5 × 1 = 5**

अ) धारानगराधीशः कः ?

आ) ज्ञानमात्रफला का ?

इ) तारापीडमहाराजेन पालिता नगरी का ?

ई) वृथाप्रतिज्ञाकरणं कस्य देषः ?

उ) नलेन महीतले काः निवारिताः ?

**XI. अधोनिर्दिष्ट कथां पाठित्या प्रश्नानां समाधानानि दत्त।** **5 × 1 = 5**

काकः कश्चित् अपूपम् अपहृत्यः आगतः। सः अपूपं भक्षयितुं वृक्षस्य शाखायाम् उपविष्टः। अत्रान्तरे जम्बुकः कश्चित् तत्र आगतः। सः काकस्य मुखे अपूपम् अपश्यत्। तम् अपहर्तुम् जम्बुकः उपायम् अचिन्तयत्।

सः काकं प्रति एवम् अवदत् – काक! मातुल ! भवान् अतीव सुन्दरः। तव वर्णः मनोहरः । तव कण्ठस्वरः अतीव मधुरः। तव गानं श्रोतुम् इच्छामि । कृपया श्रावय इति।

काकः स्तुतिप्रियः सः आत्मानम् अतीव सुन्दरं मन्यमानः मुखं व्यादाय गातुम् आरभत। काकास्य मुखात् यदा अपूपः भूमौ पपात, तदां तं गृहीत्वा जम्बुकः पलायितः जम्बुकेन वञ्चितः काकः पश्चात् दुःखितः।

अ) काकः किम् अपहृत्य आगतः ?

आ) काकः कुत्र उपविष्टः ?

इ) जम्बुकः काकस्य मुखे किम् अपश्यत् ?

ई) काकः कथं गातुम् आरभत ?

उ) वञ्चकाः किं वदन्ति ?

**XII. त्रीणि सन्धिनामनिर्देशपूर्वकं सन्धत्त।** **3 × 2 = 6**

| | | |
|---|---|---|
| अ) शरत् + चन्द्रः | आ) रामस्+ टीकते | इ) वाक् + ईशः |
| ई) वाक् + मयम् | उ) शिवः + अहम् | ऊ) कविः+आयाति |

**XIII. नामनिर्देशपूर्वकं त्रीणि विघटयत।** **3 × 2 = 6**

| | | |
|---|---|---|
| अ) मनश्चलति | आ) तट्टीका | इ) अजन्तः |
| इ) तन्मात्रम् | उ) सोऽपि | ऊ) पितुरिच्छा |

BABY BULLET-Q AP

**XIV. द्वयोः शब्दयोः सविशक्तिक रूपाणि लिखत।** $2 \times 6 = 12$

अ) जलमुच् आ) वाच् इ) पचत् इ) यद् (स्त्री)

**XV. समासनामनिर्देशपूर्वकं त्रयाणां विग्रहवाक्यानि लिखत।** $3 \times 2 = 6$

अ) कंसकृष्णौ आ) त्रिभुवनम् इ) यथाशक्ति

ई) वृक्षमूलम् उ)अल्पवातः ऊ)उपदशाः

**XVI. अधोनिर्दिष्टपट्टिकामाधारीकृत्य पञ्चसाधुवाक्यानि लिखत** $5 \times 1 = 5$

| | | |
|---|---|---|
| शिवः | फलं | खादामि |
| सः | पाठं | पठसि |
| अहं | चित्रं | पश्यति |
| त्वं | देवं | पिबति |
| गीता | क्षीरं | पूजयति |

BABY BULLET-Q AP

# PRACTICE PAPER-I

## ANSWERS

## I. एकस्य श्लोकस्य प्रतिपदार्थ भावं लिखत ।

अ. **दुर्बलस्य बलं राजा, बालानां रोदनं बलम् ।**
**बलं मूर्खस्य मौनित्वं, चोराणाम् अनृतम् बलम् ॥**

**कविपरिचयः** अयं श्लोकः 'सूक्तिरत्नावली' इति पाठ्यभागात् स्वीकृतः। अस्य कर्तारः विविधकवयः।

**पदविभागः** दुर्बलस्य, बलं, राजा, बालानां, रोदनं, बलम् ।
बलं, मूर्खस्य, मौनित्वं, चोराणाम्, अनृतम् बलम् ॥

**తెలుగు अन्वयक्रम :-**

दुर्बलस्य, राजा, बलं, बालानां, रोदनं, बलम्
मूर्खस्य, मौनित्वं, बलं, चोराणाम्, अनृतम्, बलम् ।

**प्रतिपदार्थः**

| | | |
|---|---|---|
| दुर्बलस्य | = | బలహీనుడికి |
| राजा | = | రాజు |
| बलं | = | బలం, |
| बालानां | = | చిన్నపిల్లలకి |
| रोदनं | = | ఏడుపు |
| बलम् | = | బలం, |
| मूर्खस्य | = | మూర్ఖుడికి |
| मौनित्वं | = | మౌనంగా ఉండటం |
| बलं | = | బలం, |
| चोराणाम् | = | దొంగలకి |
| अनृतम् | = | అబద్ధం |
| बलम् | = | బలం |

**भावः** బలహీనుడికి రాజు బలం, చంటి పిల్లలకి ఏడుపు బలం, మూర్ఖుడికి మౌనం బలం, దొంగలకి అబద్ధం బలం అవుతాయి.

**English अन्वयक्रम :-**

दुर्बलस्य, राजा, बलं, बालानां, रोदनं, बलम्
मूर्खस्य, मौनित्वं, बलं, चोराणाम्, अनृतम्, बलम् ।

**प्रतिपदार्थः**

| | | |
|---|---|---|
| दुर्बलस्य | = | For the weak |
| राजा | = | the King (is) |
| बलं | = | strength, |
| बालानां | = | tor children |
| रोदनं | = | crying (is) |
| बलम् | = | strength, |
| मूर्खस्य | = | for a fool |
| मौनित्वं | = | silence (is) |
| बलं | = | strength, |
| चोराणाम् | = | for thieves |
| अनृतम् | = | lying (is) |
| बलम् | = | strength |

**भावः** For the weak the king is strength; for children crying is strength; for a fool silence is strength; and for thieves lying is strength.

BABY BULLET-Q AP

**आ. अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् ।**
**अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतस्सुखम् ॥**

**कविपरिचय:** अयं श्लोक: 'सूक्तिरत्नावली' इति पाठ्यभागात् स्वीकृत:।
अस्य कर्तार: विविधकवय:।

**पदविभाग:** अलसस्य, कुतो , विद्या, अविद्यस्य, कुतो, धनम्
अधनस्य, कुतो, मित्रम्, अमित्रस्य, कुत:, सुखम् ॥

**తెలుగు अन्वयक्रम :-**

अलसस्य, विद्या, कुत:, अविद्यस्य, धनम्, कुत:, अधनस्य, मित्रम्, कुत:, अमित्रस्य, सुखम्, कुत:।

**प्रतिपदार्थ:**

| | | |
|---|---|---|
| अलसस्य | = | లక్ష్యం లేనివానికి |
| विद्या | = | విద్య |
| कुत: | = | ఎక్కడ? |
| अविद्यस्य | = | విద్య లేనివానికి |
| धनम् | = | ధనం |
| कुत: | = | ఎక్కడ? |
| अधनस्य | = | ధనం లేనివానికి |
| मित्रम | = | మిత్రుడు |
| कुत: | = | ఎక్కడ? |
| अमित्रस्य | = | మిత్రుడు లేనివానికి |
| सुखम् | = | సుఖము |
| कुत: | = | ఎక్కడ? |

**भाव:** లక్ష్యం లేనివానికి చదువు, చదువు లేనివానికి ధనం, ధనం లేనివానికి మిత్రుడు, మిత్రుడు లేనివానికి సుఖం లభించవు.

**English अन्वयक्रम :-**

कुत:, अलसस्य,विद्या, कुत:, अविद्यस्य, धनम्, कुत:, अधनस्य, मित्रम्, कुत:, अमित्रस्य, सुखम्।

**प्रतिपदार्थ:**

| | | |
|---|---|---|
| कुत: | = | How can |
| अलसस्य | = | an aimless one(gets) |
| विद्या | = | education? |
| कुत: | = | How can |
| अविद्यस्य | = | an uneducated (gets) |
| धनम् | = | wealth? |
| कुत: | = | How can |
| अधनस्य | = | wealthless one (gets) |
| मित्रम | = | friend ? |
| कुत: | = | How can |
| अमित्रस्य | = | friendless one (gets) |
| सुखम् | = | happiness ? |

**भाव:** How can an aimless person obtain education? How can an uneducated person obtain wealth? How can a person without wealth obtain friends? How can a friendless person obtain happiness?

BABY BULLET-Q AP

## अ) विष्णुभक्तः अम्बरीषः इति पाठ्भागस्य सारांशं सङ्ग्रहेण लिखत ।

**स. परिचयः** **'విష్ణుభక్తః అంబరీషః'** అనే పాఠ్యభాగము శ్రీమద్భాగవతంలోని తొమ్మిదవ స్కంధంలోని 4, 5 వ అధ్యాయాల నుంచి స్వీకరించబడినది. దీనిని రచించినది **వేదవ్యాస మహర్షి.**

**అంబరీషుని గుణగణాలు:** పూర్వము అంబరీషుడనే మహారాజు ఉండేవాడు. అతడు విష్ణువుకు మహా భక్తుడు. సాధువులు, భక్తులయందే అతని మనస్సు ఎల్లప్పుడూ లగ్నమై ఉండేది. ప్రతి పనిని త్రికరణశుద్ధిగా చేసి ఫలితాన్ని కృష్ణార్పణం చేసేవాడు. అందువలన అతనికి ఈ లోకమంతా చిన్న మట్టి ముద్దలాగే కనిపించేది.

**विश्वं येनेदं लोष्टवत् स्मृतम् ।**

**అంబరీషుని ద్వాదశి వ్రత ఆచరణ:** అంబరీషుడు తన భార్యతో కలిసి ఒక సంవత్సరంపాటు ద్వాదశీ వ్రతాన్ని ఆచరించాడు. **अम्बरीषः द्वादशी व्रतं दधार** వ్రతం ముగింపులో అంబరీషుడు యమునా నదిలో స్నానం చేసి, **మధువనంలో** శ్రీ మహావిష్ణువును ఆరాధించాడు. రుచికరమైన భోజనంతో బ్రహ్మణోత్తములను తృప్తిపరచి, వారి అనుమతితో తాను పారణానికి (ఉపవాసం తరువాత చేసే భోజనం) సిద్ధపడ్డాడు.

**దుర్వాస మహర్షి ఆగమనం:** సరిగ్గా అదే సమయంలో **దుర్వాస మహర్షి అతిథిగా** అక్కడికి విచ్చేస్తాడు. అతిథి మర్యాదలు పొందిన దుర్వాసుడు **కాళిందీ నది**కి స్నానమాచరించడానికి వెళతాడు. ఈ లోపే వ్రత సమయం సమీపించడంతో మీమాంసలో ఉన్న అంబరీషుడు బ్రాహ్మణుల సలహాతో కొంచెం నీటిని స్వీకరిస్తాడు. అదే సమయంలో తిరిగి వచ్చిన దుర్వాసుడు జరిగిన విషయాన్ని గ్రహించి కోపంతో తన తలలో నుండి జడను లాగి దానిని మంత్రించి **ఒక కృత్య (శక్తి)**ను తయారు చేసి అంబరీషుడిపై ప్రయోగిస్తాడు.

**సుదర్శన చక్రం రక్షణ:** భక్తజనరక్షకుడైన శ్రీహరి దీనిని గమనించి శత్రువులని శిక్షించేది, భక్తులను రక్షించేది అయిన **సుదర్శన చక్రాన్ని అంబరీషుడికి** ఇస్తాడు. సుదర్శన చక్రం కృత్యను దహించవేసి దుర్వాసుని వెంటపడుతుంది. దానికి భయపడిన దుర్వాసుడు నలుదిక్కులకు పరుగులు పెడుతూ మేరు పర్వతగుహలోనికి వెళ్తాడు. **गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः।** ఆపై అంతరిక్షంలోకి, సముద్రంలోకి చివరికి దేవలోకానికి చేరుకొంటాడు.

**దుర్వాసుడికి ప్రాణభిక్ష:** సుదర్శడిని తట్టుకోలేని దుర్వాసుడు శ్రీహరిని శరణు కోరతాడు. అందుకు శ్రీహరి నేను భక్తపరాధీనుడిని. సజ్జన సాధువులు నా హృదయంలో ఉంటారు. నేను సాధువుల హృదయాలలో ఉంటాను.

**साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम्।** అందువలన క్షమించమని నీవు అంబరీషుడినే వేడుకో అంటాడు. చివరికి దుర్వాసుడు తనను మన్నించమని అంబరీషుడిని వేడుకోగా జాలితో అతడు సుదర్శనుడిని ప్రార్థించి శాంతింపజేసి దుర్వాసుడికి ప్రాణభిక్ష పెట్టాడు.

**దుర్వాస మహర్షి ఆశీస్సులు :** విష్ణుభక్తుడైన అంబరీషుడిలో ఉన్న సద్గుణాలను అర్థం చేసుకున్న దుర్వాసమహర్షి చివరికి వ్రతభోజనం చేసి అంబరీషుడి ఆతిథ్యానికి తాను ఎంతగానో తృప్తిచెందానని అతనిని ప్రశంసిస్తూ ముల్లోకాలలో నిన్ను గొప్పగా కీర్తిస్తారని ఆశీస్సులు అందించాడు.

स. **Introduction:** The lesson **"Vishnubhakthaha Ambareeshaha"** is taken from Chapters 4 and 5 of the Ninth Skandha of **Srimad Bhagavatam**. It was composed by sage **Vedavyasa Maharshi**.

**The Virtues of Ambareesha:** In ancient times, there lived a king named Ambareesha. He was a great devotee of Lord Vishnu. His mind was always focused only on sages and devotees. He performed every action with pure sincerity of mind, speech, and action and offered the results to Lord Krishna . Because of this devotion, the entire world appeared to him as nothing more than a small lump of clay.विश्वं येनेदं लोष्ठवत् स्मृतम् ।

**Ambareesha's Dwadashi Vrata :** Ambareesha, along with his wife, observed the Dwadashi Vrata for a year. अम्बरीषः द्वादशी व्रतं दधार At the conclusion of the ritual, Ambareesha took a holy bath in the Yamuna River and worshipped Lord Mahavishnu in **Madhuvanam.** He satisfied the finest of Brahmins with a delicious feast and, with their permission, prepared to break his fast .

**The Arrival of Sage Durvasa:** Exactly at that moment, **Sage Durvasa arrived there as a guest.** After receiving hospitalities, Durvasa went to the **Kalindi** (Yamuna) River to perform his ritual bath. Meanwhile, as the auspicious time to break the fast was coming to an end, Ambareesha found himself in a dilemma. On the advice of the Brahmins, he consumed a little water. Returning at that moment, Durvasa realized what had happened. In a fit of rage, he tore a lock of hair from his head, chanted a mantra over it, created a **destructive force (*Kritya*)**, and unleashed it upon Ambareesha.

**Protection by the Sudarshana Chakra :** Sri Hari, who protects His devotees, noticed this and granted Ambareesha the **Sudarshana Chakraa** that punishes enemies and shields believers. The Sudarshana Chakra burnt the *Kritya* and began chasing Durvasa. Terrified, Durvasa fled in all four directions, running to Meru mountain caves,गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः। then into outer space, into the oceans, and finally reached the realm of the gods (*Devaloka*).

**Lifesaving Mercy for Durvasa :** Unable to withstand the heat of the Sudarshana Chakra, Durvasa surrendered to Sri Hari and sought refuge. Sri Hari replied, "I am bound by my devotees. Pure-hearted sages live in my heart, and I live in the hearts of sages.साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम्। So, go and beg Ambareesha himself for forgiveness." Ultimately, Durvasa went and pleaded with Ambareesha for mercy. Moved by compassion, Ambareesha prayed to the Sudarshana Chakra, calmed it down, and saved Durvasa's life.

**Blessings of Sage Durvasa :** Having understood the noble qualities of the Vishnu devotee Ambareesha, Sage Durvasa finally partook in the ritual meal. Expressing immense satisfaction with Ambareesha's hospitality, he praised him and blessed him, saying that Ambareesha would be gloriously renowned throughout the three worlds.

BABY BULLET-Q AP

आ) ''कृष्णाप्रबोधः'' इति पाठ्यभागस्य सारांशं सङ्क्षेपेण लिखत ।

स. **परिचयः** **"కృష్ణాప్రబోధ"** అనే పాఠ్యభాగం **"కిరాతార్జునీయం"** అనే మహాకావ్యంలోని ప్రథమ సర్గ నుంచి స్వీకరించబడినది. ఈ కావ్యాన్ని రచించినది **భారవి మహాకవి.** కృష్ణా అంటే ద్రౌపది. ప్రభోదము అంటే మేలుకొలుపు. ధర్మరాజుకు ద్రౌపది చేసిన బోధయే కృష్ణా ప్రబోధము.

**పాండవుల అరణ్యవాసం:** పాండవులు అరణ్యవాసం చేస్తున్నారు. అక్కడ **ద్వైతవనంలో యుధిష్ఠిరుడిని (ధర్మరాజుని) వనేచరుడు కలుస్తాడు. దుర్యోధనుడి పాలన గురించి ప్రజల అభిప్రాయాన్ని తెలుసుకోవడానికి వనేచరుడు గూఢచారిగా నియమించబడ్డాడు.** తాను చూసింది చూసినట్టుగా విన్నది విన్నట్లుగా ధర్మరాజుకు విన్నవిస్తాడు వనేచరుడు.

**వనేచరుని నివేదన :** గూఢచారుల ద్వారా అన్నీ తెలుసుకునే రాజులను సేవకులు మోసం చేయలేరు. అందువల్ల మంచి అయినా చెడు అయినా గూఢాచారులు నిజం చెప్పాలి. **హితకరమైన మరియు మనోహరమైన మాటలు లభించడం దుర్లభం. हितं मनोहारि च वचः दुर्लभम् ।**

**ద్రౌపది ఆగ్రహావేశం :** వనేచరుడు దుర్యోధనుడి ప్రజారంజక పాలన గురించి ధర్మరాజుకు తెలియజేశాడు. అది విన్న ద్రౌపది కౌరవులు చేసిన అరాచకాలను గుర్తుకు తెచ్చుకొని ఆగ్రహావేశాలకు లోనవుతుంది. **ధర్మరాజులో కోపాన్ని రగలించి కార్యోన్ముఖుడిని చేసే మాటలను ద్రౌపది** పలికింది.

**ద్రౌపది ప్రబోధం:** ఓ రాజా! మీ వంశపు రాజులు ఎంతోకాలం పాలించిన **ఈ భూమిని, మదించిన ఏనుగు తన మెడలోని పూలమాలను పడవేసినట్లుగా నువ్వే నీ రాజ్యాన్ని నీ చేతులతో వదిలివేశావు.** గుణాలను ప్రేమించే, తన వంశ గౌరవాన్ని కాపాడే రాజు తన రాజ్యసంపదను భార్యను కాపాడినట్లు రక్షించాలి. **मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम् ।** అలాంటి సంపదను ఇతరులు అపహరిస్తుంటే ఎవరు సహిస్తారు? నీ మనస్సు ఎలా ఆలోచిస్తుందో నాకు పూర్తిగా అర్థం కావడం లేదు. **మనుషుల మనోభావాలు విచిత్రంగా ఉంటాయి. चित्तवृत्तयः विचित्ररूपाः ।** కానీ నీ ఈ దుస్థితిని గురించి ఆలోచించినప్పుడల్లా నా హృదయం తీవ్రంగా బాధపడుతోంది. **रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः ।**

**పాండవుల గురించి ద్రౌపది ప్రశ్నలు:** ఓ రాజా ! నీ పరిపాలనలో భీముడు చందన శరీరంతో ఉండేవాడు, ఇప్పుడు దుమ్ముతో పాదచారిగా ఉన్నాడు. దేవేంద్రునితో సమానమైన అర్జునుడు నారవస్త్రాన్ని ధరిస్తున్నాడు. అతి సుకుమారులైన నకుల సహదేవులు కటిక నేలపై పడుకొని కఠిన శరీరం కలిగిన అడవి ఏనుగుల్లా తయారయ్యారు. నీ సోదరులను చూసి నీకు శోకం, కోపం రావటం లేదా? అని ప్రశ్నించింది.

**ముక్తాయింపు ప్రబోధం:** ఓ రాజా! నీ యొక్క అధిక సహనాన్ని విడిచి, శత్రువులను సంహరించడానికి సిద్ధపడు. శాంతి, వైరాగ్యంతో విజయాన్ని పొందేది మునులు; రాజులు కాదు. **शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः ।** రాజుకు అవసరమైనది శత్రువులపై చర్య తీసుకోవడం.

BABY BULLET-Q AP

**स. Introduction:** The lesson **"Krishna Prabodha"** is taken from the first Canto (*Prathama Sarga*) of the epic poem **"Kiratarjuniya"**. This mahakavya (epic) was composed by the great poet **Bharavi**. Here, "Krishna" refers to **Draupadi**. "Prabodha" means **counseling**. The guidance and counseling given by Draupadi to Dharamaraja (Yudhishthira) is the essence of "Krishna Prabodha".

**The Pandavas' Forest Exile :**The Pandavas were living out their exile in the forest. While in the **Dwaitavana forest, Vanechara met Yudhishthira . He had been appointed as a spy to understand the public opinion** regarding Duryodhana's governance. The Vanechara faithfully reported to Dharmaraja exactly what he saw and heard, without filtering any facts.

**The Report of the Vanechara :** Servants cannot deceive kings who keep themselves completely informed through spies. So whether the news is good or bad, spies must speak the absolute truth. Finding words that are both highly beneficialand pleasing to the ear is extremely rare.**हितं मनोहारि च वचःदुर्लभम् ।**

**The Wrath of Draupadi :** The Vanechara informed Dharmaraja about Duryodhana's prosperous, welfare-oriented rule. Draupadi upon hearing this and remembering the atrocities committed against them by the Kauravas, got intense anger. She spoke words meant to ignite fury in Dharmaraja and prompt him into immediate action.

**Draupadi's Awakening Call: "O King! Just like an elephant in rut casts away the flower garland from its neck, you have, with your own hands, abandoned your kingdom.** A king who loves virtues and protects the honor of his lineage must safeguard his kingdom's wealth just as he would protect his own wife. Who can tolerate it when others steal kingdom's wealth? **मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम् ।** I cannot fully comprehend how your mind works. Human psychology is indeed strange. **चित्तवृत्तयः विचित्ररूपाः।** But whenever I think about this miserable plight of yours, my heart aches deeply. **रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः ।**

**Draupadi's Words Regarding the Pandavas :** "O King! Once, Bhima's body used to be smeared with luxurious sandalwood paste; today, he walks on foot, covered in dust. Arjuna, who is equal to Lord Indra, is now clad in bark garments . The highly delicate Nakula and Sahadeva are sleeping on the bare, hard ground, their bodies hardened like wild forest elephants. Looking at your brothers, do you not feel grief or anger? "

**Concluding Remarks :** "O King! Give up this excessive patience of yours and prepare yourself to destroy the enemies. It is ascetics and sages who attain victory through peace and renunciation, not kings. **शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।**What a king needs is swift, decisive action against his enemies."

BABY BULLET-Q AP

**III. एकं निबन्धप्रश्नं समाधत्त ।** $1 \times 6 = 6$

**अ) शतानन्देनोक्तं विश्वामित्रचरितम् समालिखत ।**

**स. परिचय:** **"విశ్వామిత్ర చరిత్రమ్"** అనే ఈ పాఠ్యభాగం **చంపూరామాయణం**లోని **బాలకాండ** నుంచి స్వీకరించబడినది. దీనిని రచించినది **భోజమహాకవి.**

**విశ్వామిత్రుని దురాశ :** ఒకప్పుడు రాజర్షి అయిన విశ్వామిత్రుడు (కుశికనందనుడు) వశిష్ఠ మహర్షి ఆశ్రమానికి వచ్చాడు. వశిష్ఠుడు చేసిన అపూర్వమైన అతిథి సత్కారానికి కారణం దేవతా గోవు కామధేనువు పుత్రిక అయిన సురభి అని తెలుసుకున్నాడు. సురభి తనకు కావాలని విశ్వామిత్రుడు అడగగా వశిష్ఠుడు దానికి నిరాకరించాడు. విశ్వామిత్రుడు సురభిని బలవంతంగా తీసుకువెళ్ళసాగాడు. వశిష్ఠ విశ్వామిత్రుల మధ్య సురభి కోసం యుద్ధం జరిగింది. ఈ యుద్ధంలో విశ్వామిత్రుడు సంధించిన దివ్యాస్త్రాలను వశిష్ఠుడు తన బ్రహ్మదండంతో ఎదుర్కొన్నాడు. క్షత్రియతేజస్సు కన్నా బ్రహ్మతేజస్సే గొప్పదని విశ్వామిత్రుడు తెలుసుకున్నాడు. **क्षात्रात् तेजसः परं ब्राह्ममेव महो महीयः ।**

**త్రిశంకుని స్వర్గ వాంఛ:** సూర్య వంశానికి చెందిన త్రిశంకు మహారాజు సశరీరంగా స్వర్గానికి వెళ్ళాలనుకున్నాడు. అందుకోసం వశిష్ఠుడిని ఆశ్రయించాడు. కాని వశిష్ఠుడు నిరాకరించాడు. దానితో త్రిశంకుడు వశిష్ఠుడి పుత్రులను సంప్రదించాడు. వారు కోపంతో అతడిని 'చండాలునిగా మారిపో' అని శపించారు. పట్టువీడని త్రిశంకుడు విశ్వామిత్రుడిని శరణు కోరాడు. అతని కోసం విశ్వామిత్రుడు క్రతువు చేయటం ప్రారంభించాడు.

**త్రిశంకు స్వర్గం:** విశ్వామిత్రుడు తన తపోశక్తితో త్రిశంకుడిని స్వర్గానికి పంపించాడు. **आरोपयामास दिवं त्रिशङ्कुम्।** నల్లని వస్త్రాలతో చండాలుడిగా మారి ఉన్న త్రిశంకుడిని చూసిన దేవతలు అతడిని స్వర్గం నుండి కిందికి గెంటేశారు. కోపంతో రగిలిపోయిన విశ్వామిత్రుడు త్రిశంకుడికి ఆకాశంలో స్వర్గాన్ని సృష్టించడం ప్రారంభించాడు. అదే త్రిశంకు స్వర్గం. వెంటనే దేవతలు దిగివచ్చి విశ్వామిత్రుడిని బ్రతిమిలాడారు. దాంతో విశ్వామిత్రుడు కొత్త సృష్టిని ఆపాడు.

**అంబరీషుని యజ్ఞం:** అంబరీషుడనే రాజు యజ్ఞం చేస్తున్నాడు. అతడి యజ్ఞ పశువు కనిపించకుండా పోయింది. దాంతో అంబరీషుడు బ్రాహ్మణ కుటుంబానికి చెందిన ఋచీకుని కుమారుడైన శునశ్శేపుడుని కొని అతడిని బలి ఇవ్వడానికి సిద్ధపడ్డాడు. భయంతో శునశ్శేపుడు విశ్వామిత్రుడిని శరణుకోరాడు. బలిపీఠం ఎక్కిన శునశ్శేపుని చేత రెండు రకాల ఋక్కులను చదివించాడు. అందుకు ఇంద్రుడు, విష్ణువు సంతోషించారు. శునశ్శేపుడి ప్రాణాలు దక్కాయి,

**విశ్వామిత్రుని తపోభంగం:** విశ్వామిత్రుడి తపస్సును భగ్నం చేయడానికి మేనక వచ్చింది. మేనకతో కలిగిన సాంగత్యం వలన మరలా తపోభంగం జరిగింది. పశ్చాత్తాపంతో విశ్వామిత్రుడు కౌశికీ తీరం వద్ద తపస్సు చేశాడు.

**బ్రహ్మర్షిగా మారటం:** ఇంద్రుడు ఈసారి రంభని పంపాడు. రంభని పర్వతంలా మారమని విశ్వామిత్రుడు శపించాడు. విశ్వామిత్రుడి తపోగ్ని జ్వాలలకి దేవతలందరూ గడగడలాడిపోయారు. బ్రహ్మదేవుడు వచ్చి విశ్వామిత్రుడి జితేంద్రియత్వానికి మెచ్చి బ్రహ్మర్షిత్వాన్ని ప్రసాదించాడు. **जितेन्द्रियत्वात् - ब्रह्मर्षिरसि ।** వశిష్ఠుడి వలే నీవు కూడా బ్రహ్మర్షిగా పిలువ బడతావు అని అనుగ్రహించాడు.

BABY BULLET-Q AP

स. **Introduction :** The lesson titled **“Vishwamitra Charitram”** is extracted from the *Bala Kanda* of the **Champu Ramayanam**. It was composed by the great king and poet **Bhoja Mahakavi**.

**Vishwamitra’s Greed :** Once, Rajarishi Vishwamitra(Kusikanandanudu), visited the hermitage of Sage Vashistha. He came to know that the reason behind the extraordinary hospitality offered by Vashishta was Surabhi, the daughter of the divine cow Kamadhenu. When Vishwamitra requested that Surabhi be given to him, Vashistha refused. Consequently, Vishwamitra attempted to take Surabhi away by force. This led to a battle between Vashistha and Vishwamitra over the divine cow. In this battle, Vashistha countered all the divine weapons unleashed by Vishwamitra using his spiritual staff, the *Brahmadandam*. Following this defeat, Vishwamitra realized that spiritual power is far superior to warrior power.क्षात्रात् तेजसः परं ब्राह्ममेव महो महीयः ।

**Trishanku’s Desire for Heaven :** King Trishanku, belonging to the Solar dynasty, desired to ascend to heaven in his mortal body. For this purpose, he sought the refuge of Sage Vashistha. However, Vashistha rejected his request. Dissatisfied, Trishanku approached Vashistha’s sons. Enraged by this, they cursed him to turn into a *Chandala* . Persistent in his desire, Trishanku surrendered to Vishwamitra for help. Vishwamitra then began performing a grand sacrificial ritual for his sake.

**Trishanku Swargam:** Using the power of his penance, Vishwamitra sent Trishanku up to heaven. आरोपयामास दिवं त्रिशङ्कुम्। However, upon seeing Trishanku ascending in dark clothes as a *Chandala*, the gods pushed him back down from heaven. Furious at this insult, Vishwamitra began creating a parallel heaven in mid-air for Trishanku. This creation came to be known as *Trishanku Swargam*. Terrified by this, the gods immediately descended to earth and pleaded with Vishwamitra, whereupon he ceased his new creation.

**Ambareesha’s Yagnam:** A king named Ambareesha was performing a sacrificial ritual *Yagnam*, but the sacrificial animal went missing. Left with no choice, Ambareesha bought Shunashepha, the son of Ruchikudu, a Brahmin, intending to offer him as a sacrifice instead. Terrified, Shunashepha sought refuge with Vishwamitra. Vishwamitra then taught Shunashepha two specific hymns (*Riks*) to chant while bound to the sacrificial post.Pleased by this chanting, Indra and Lord Vishnu blessed him; Shunashepha’s life was saved.

**Disruption of Vishwamitra’s Penance:** Menaka was sent to disrupt Vishwamitra’s severe penance. Due to his association with Menaka, his penance was broken once again. Filled with remorse, Vishwamitra went to the banks of the Kaushiki River for penance.

**Vishwamitra turning to Brahmarishi :**This time, Lord Indra sent the Rambha to disrupt his focus. Vishwamitra cursed Rambha to turn into a stone. The spiritual intensity of Vishwamitra’s fiery penance made all the gods tremble with fear. Finally, Lord Brahma appeared before him, appreciated his mastery over his senses, and bestowed upon him the ultimate title of **Brahmarishi**. जितेन्द्रियत्वात् - ब्रह्मर्षिरसि । Lord Brahma blessed him, stating, “From now on, you shall be addressed as a Brahmarishi, just like Sage Vashistha.”

## आ) 'दयावीरो विक्रमः' इति पाठ्यभाग सारांशं लिखत ।

**स. परिचयः "దయావీర విక్రమః"** అనే పాఠ్యభాగము **సింహాసన ద్వాత్రింశికా** అనే కథా సంగ్రహం నుండి స్వీకరించబడినది. దీనిని రచించినది **వరరుచి.** సాలభంజిక (బొమ్మ) విక్రమార్కుడి పరోపకారం, దయా గుణాన్ని తెలిపే కథ ఇది.

**విక్రమాదిత్యుని పరాక్రమ వర్ణన:** ఓ రాజా! విక్రమాదిత్యుడి పాలనలో పాపాత్ములకు, దొంగలకు, లోభులకు చోటులేదు. అతడికి శత్రు భయం లేదు. శత్రు భయం ఉన్నవాడికి నిద్ర ఉండదు. విక్రమాదిత్యుడు ప్రశాంత చిత్తుడు. ఆలోచనలతో సతమతమయ్యే వాడికి సుఖం, నిద్ర ఉండవు. విక్రముడు కేవలం ఆజ్ఞలతోనే పాలన చేసేవాడు. రాజ్యాధికారానికి ఫలితం ఆజ్ఞాపించే శక్తి, తపస్సుకి ఫలితం బ్రహ్మచర్యం, విద్యకి ఫలితం జ్ఞానం, ధనానికి ఫలితం దానం మరియు భోగం.

**విక్రముని దేశాంతర పర్యటన :** విక్రముడు దేశాంతర పర్యటనలో ఒకరోజు సాయంత్రానికి ఒక మహారణ్యంలోకి వెళ్ళాడు. అక్కడ ఒక చెట్టు మీద చిరంజీవి అనే పేరు గల ఒక పక్షిరాజు (గ్రద్ధ) నివసిస్తోంది. దాని పిల్లలూ, మనుమలూ ఆహారం కోసం దేశాంతరం వెళ్తూ ఉండేవి. సాయంత్రానికి తలా ఒక పండు తెచ్చి చిరంజీవికి ఇచ్చి, తమ పర్యటనా విశేషాలు మాట్లాడుకునేవి.

**పక్షి వ్యథ:** ఆ రాత్రి పక్షిరాజైన చిరంజీవితో ఒక పక్షి తనకు దుఃఖాన్ని కలిగించిన ఒక విషయాన్ని చెప్పింది. ఇతరులతో పంచుకుంటే దుఃఖం తగ్గుతుందని పక్షిరాజు చెబుతుంది. ఉత్తర దేశంలో శైవాలఘోషం అనే పర్వతంపై ఒక రాక్షసుడు పలాశం అనే నగరంపై పడి దొరికిన జనాన్ని దొరికినట్లుగా తినేస్తూ ఉండేవాడు.అప్పుడు ఆ ప్రజలు రోజుకు ఒకరిని ఆహారంగా పంపుతాము అనే ఒప్పందం చేసుకున్నారు.

**ధర్మ సంకటంలో బ్రాహ్మణుడు:** ఈ రోజు నా స్నేహితుడైన ఒక బ్రాహ్మణుని వంతు వచ్చింది. తన కొడుకుని పంపితే తమ వంశం నిర్వీర్యమవుతుంది. తాను వెళితే భార్య వితంతువవుతుంది. భార్యను పంపితే ఆశ్రమ ధర్మాన్ని తప్పినట్లవుతుంది అని మధనపడుతున్నాడు. "స్నేహితుడి దుఃఖాన్ని తన దుఃఖంలా భావించేవాడే నిజమైన స్నేహితుడు"

**విక్రముని త్యాగశీలత:** పక్షుల మాటలు విన్న విక్రముడు వధ్యశిల దగ్గరకు వెళ్ళాడు. అతడిని తినడానికి వచ్చిన రాక్షసుడు చిరునవ్వుతో ఉన్న విక్రముడిని చూసి నీవు చాలా ధైర్యంగా ఉన్నావు, నీకు ఏ మాత్రం బాధ లేదు, ఎవరు నువ్వు అని ప్రశ్నించాడు.

**పరోపకారం యొక్క గొప్పతనం:** 'పరోపకారం కోసం నేను స్వేచ్ఛగా శరీరం అర్పించటం వలన నాకు ఏ బాధా లేదు' అని బదులిచ్చాడు."పరోపకారం చేస్తే ఉత్తమగతులు పొందుతారు, వారు శ్లాఘనీయులు", "చందనపు చెట్టు ఇతరులకు సుగంధాన్ని, చల్లదనాన్ని ఇస్తుంది, తాను తాపం తీర్చుకోదు. **तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं यः परार्थे हि जीवति। न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः।** ఇలా పలికిన విక్రముడి మాటలను రాక్షసుడు ప్రశంసిస్తూ వరం కోరుకోమన్నాడు.

**విక్రముని హితబోధ :** అప్పుడు విక్రముడు "నీ ప్రాణాలు నీకు ఎంత విలువైనవో ఇతరుల ప్రాణాలు కూడా వారికి అంతే విలువైనవి." **परेषामपि रक्ष जीवितम् ।** అందరూ మరణ భయంతో ఉంటారు కావున ఈ నరులను తినవద్దు అని కోరుకుంటాడు. దానితో రాక్షసుడిలో మార్పు వచ్చి నరభక్షణాన్ని విడిచిపెట్టాడు. విక్రముడు తన రాజ్యానికి తిరిగి చేరుకున్నాడు.

BABY BULLET-Q AP

स. **Introduction:** The lesson titled **"Dayaveera Vikramaha"** (Vikrama, The Hero of Compassion) is taken from a collection of stories called **Simhasana Dvatrimshika**. It was composed by **Vararuchi**.

**Description of Vikramaditya's Valor :** "O King! Under the rule of Vikramaditya, there was no place for sinners, thieves, or greedy misers.He had absolutely no fear of enemies. A person who fears enemies can never sleep peacefully.Vikramaditya was a man of profound mental tranquility. Anyone whose mind is constantly plagued with anxious thoughts experiences neither happiness nor sleep. Vikramaditya ruled solely through his commands. The fruit of absolute state authority is the power to command; the fruit of penance is celibacy (*Brahmacharya*); the fruit of education is wisdom; and the ultimate fruit of wealth is charity (*Danam*) and its righteous enjoyment (*Bhogam*)."

**Vikrama's Travel Across Countries:** "During his travel across various countries, Vikram entered a vast forest one evening. There, a king of birds (an eagle) named Chiranjeevi was living on a tree." His children and grandchildren would travel to other lands during the day in search of food. By evening, they would return, bring a fruit each for Chiranjeevi, and sit together discussing the highlights of their travels.

**The Grievance of a Bird :**That night, one of the birds shared a deeply sorrowful event with the bird-king Chiranjeevi. The bird-king comforted it, saying that sharing one's grief with others lessens the pain. The bird then narrated: "In the northern region, atop a mountain named Shraivalaghosha, a demon resides. He has been raiding the city of Palasha and ruthlessly devouring any human he lays his eyes on. Terrified, the helpless citizens entered into an agreement with him, promising to send him one human being every single day as food."

**A Brahmin in a Dilemma:**The bird continued, "Today, it is the turn of a Brahmin who happens to be my friend. He is completely devastated and agonizing over the situation: 'If I send my son, our family lineage will end. If I go myself, my wife will become a helpless widow. If I send my wife, I will be failing my sacred duty as a householder .' A true friend is one who looks upon a friend's sorrow as their very own."

**Vikrama's Sacrifice :**Having listening to the words of birds he went to Vadhyashila. When the demon arrived to eat his daily meal, he was stunned to see Vikrama facing him with a calm smile. The demon questioned him, "You seem exceptionally brave and show absolutely no sign of fear or distress. Who on earth are you?"

**The Greatness of Altruism :** Vikrama replied calmly, "I feel no pain or fear because I am willingly offering my body to save another's life. Those who perform altruistic acts for the welfare of others (*Paropakaram*) attain the highest spiritual realms; they are truly praiseworthy. A sandalwood tree gives its pleasant fragrance and cooling shade to everyone else without ever seeking to quench its own heat." **तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं यः परार्थे हि जीवति। न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः।** Hearing these profound words, the demon highly admired Vikrama and granted him a boon of his choice.

**Vikrama's Moral Counseling :** Vikrama then advised him, "Just as your own life is infinitely precious to you, the lives of other living beings are equally precious to them. **परेषामपि रक्ष जीवितम् ।** Everyone lives in constant fear of death. Therefore, you must stop devouring human beings." Moved by this counseling, a transformation came over the demon, and he completely renounced cannibalism. Having saved the people, King Vikrama successfully returned to his kingdom.

**IV. त्रयाः प्रश्नाः समाधेयाः ।** $3 \times 2 = 6$

अ) काव्येषु किं रम्यम् ?

स. काव्येषु नाटकं रम्यम् ।

---

आ) शकुन्तला आश्रमात् क्व याति ?

स. शकुन्तला आश्रमात् पतिगृहं याति ।

---

इ) महाभागः कौत्सः कीदृशः ?

स. महाभागः कौत्सः चतुर्दशकलापटुः ।

---

ई) प्रतिग्रहः केषां न शोभते ?

स. प्रतिग्रहः क्षत्रियाणां न शोभते ।

---

उ) पथिकः केन श्रान्त :?

स. पथिकः दूरप्रयाणेन श्रान्त : ।

---

ऊ) निः स्पृहस्य तृणं किम् ?

स. निः स्पृहस्य तृणं जगत् ।

BABY BULLET-Q AP

V. **द्वयोः ससन्दर्भं व्याख्यात ।** $2 \times 3 = 6$

**अ) विश्वं येनेदं लोष्ठवत् स्मृतम् ।**

**स.** **कवि परिचयः पाठः** ''विष्णुभक्तः अम्बरीषः''

**कविः** वेदव्यासः

**ग्रन्थः** श्रीमद्भागवतः ।

**सन्दर्भः** अम्बरीषं वर्णयन् कविः एवम् अवदत् ।

**भावः** अम्बरीषः वर्णयन् कविः विश्वं येनेदं लोष्ठवत् स्मृतम्। इति अवदत् ।

---

**आ) रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः ।**

**स.** **कवि परिचयः पाठः** कृष्णाप्रबोधः

**कविः** भारविः

**ग्रन्थः** किरातार्जुनीयम् ।

**सन्दर्भः** द्रौपदी धर्मराजं प्रति एवम् अवदत्।

**भावः** द्रौपदी धर्मराजं प्रति रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः इति अवदत् ।

---

**इ) गभस्तिमान् नैव सहिष्णुभावः ।**

**स.** **कवि परिचयः पाठः** ऋतुषट्कम्

**कविः** श्री ओगेटि परीक्षित् शर्मा

**काव्यम्** यशोधरा

**सन्दर्भः** ऋतोः वर्णन समये कविः एवम् अवदत्।

**भावः** ऋतोः वर्णन समये कविः गभस्तिमान् नैव सहिष्णुभावः इति अवदत् ।

---

**ई) आह्लादयत्येव हि केतकस्य ।**

**स.** **कवि परिचयः**

**पाठः** विवेकानन्दः

**कविः** सूर्यनारायणशास्त्री

**काव्यम्** विवेकानन्दम् ।

**सन्दर्भः**–नरेन्द्रं वर्णयन् कविः एवम् अवदत् ।

**भावः** नरेन्द्रं वर्णयन् कविःआह्लादयत्येव हि केतकस्य इति अवदत् ।

BABY BULLET-Q AP

**VI. द्वयोः ससन्दर्भं व्याख्यात ।** $2 \times 3 = 6$

**अ) आरोपयामास दिवं त्रिशङ्कुम् ।**

**स. कविपरिचयः**

**पाठः** विश्वामित्रचरितं
**कविः** भोजः
**काव्यम्:** चम्पूरामायणम् ।
**सन्दर्भः** कविः एवम् अवदत
**भावः** कविः आरोपयामास दिवं त्रिशङ्कुम् इति अवदत् ।

---

**आ) न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः।**

**स. कविपरिचयः**

**पाठः** दयावीरो विक्रमः

**कविः** वररुचिः

**काव्यम् :** सिंहासन द्वात्रिंशिका

**सन्दर्भः** राक्षसः एवम् अवदत्।

**भावः** राक्षसः न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः इति अवदत्।

---

**इ) आश्रितत्यागी नारकी स्यादिति न खलु ।**

**स. कवि परिचयः** **पाठः** धर्मपरीक्षा

**कविः** श्री लक्ष्मणसूरिः ।

**काव्यम् :** भारत सङ्ग्रहः ।

**सन्दर्भः** युधिष्ठिरः एवम् अवदत् ।

**भावः** युधिष्ठिरः आश्रितत्यागी नारकी स्यादिति न खलु इति अवदत्।

---

**ई) चतुर्भिरपि पदैस्सुकृतं स्थिरीकृतम् ।**

**स. कविपरिचयः- पाठः** गद्यनैषधम्

**कविः** श्री चेरुवु सत्यनारायण शास्त्री।

**ग्रन्थः** कवितामयूखाः।

**सन्दर्भः** कविः एवम् अवदत् ।

**भावः** कविः चतुर्भिरपि पदैस्सुकृतं स्थिरीकृतम् इति अवदत्।

BABY BULLET-Q AP

**VII. त्रयाणां प्रश्नानां समाधानं लिखत ।** $3 \times 2 = 6$

**अ) अम्बरीषः किं व्रतं दधार?**

**स.** अम्बरीषः द्वादशी व्रतं दधार ।

---

**आ) वनेचरः कां वेदितुम् अयुङ्क्त ?**

**स.** वनेचरः दुर्योधनस्य पालना पध्दतिं प्रजासु वृतिं च वेदितुम् अयुङ्क्त ।

---

**इ) कथं मित्राणि रिपवः जायन्ते ?**

**स.** व्यवहारेण मित्राणि रिपवः जयन्ते ।

---

**ई) गीर्वाणभारती कीदृशी ?**

**स.** गीर्वाण भारती मधुरा दिव्या मुख्या ।

---

**उ) ग्रीष्मर्तौ जगत् कथं बभूव ?**

**स.** ग्रीष्मर्तौ जगत् प्रचण्ड सूर्यातप दीपितं बभूव ।

---

**ऊ) हारावलौ नरेन्द्रः कीदृशः ?**

**स.** हारावलौ नरेन्द्रः नायकरत्नकल्पः ।

BABY BULLET-Q AP

**VIII. त्रयाणां प्रश्नानां समाधानं लिखत।** **3 × 2 = 6**

**अ) विश्वामित्रचरितम् इत्ययं पाठ्यभागः कस्मात् सङ्गृहीतः ?**

**स.** विश्वामित्रचरितम् इत्ययं पाठ्यभागः चम्पूरामायणे बालकाण्डात् सङ्गृहीतः।

---

**आ) पक्षिणो वचः श्रुत्वा राजा कुत्र गतः ?**

**स.** पक्षिणो वचः श्रुत्वा राजा वध्यशिलासमीपे गतः।

---

**इ) ''लक्ष्मीचाञ्चल्यम्'' इति पाठ्यांशः कस्मात् सङ्गृहीतः ?**

**स.** ''लक्ष्मीचाञ्चल्यम्'' इति पाठ्यांशः कादम्बरी गद्यकाव्यात् सङ्गृहीतः

---

**ई) गुणवन्तं कीदृशम् इव न स्पृशति ?**

**स.** गुणवन्तं अपवित्रम् इव न स्पृशति ।

---

**उ) भारतसङ्ग्रहः केन विरचितः ?**

**स.** भारतसङ्ग्रहः श्री लक्ष्मणसूरिणाः विरचितः ।

---

**ऊ) गद्यनैषधं कस्मात् स्वीकृतम् ?**

**स.** गद्यनैषधं कवितामयुखाः सङ्कलन ग्रन्थात् स्वीकृतम् ।

BABY BULLET-Q AP

**IX. एकेन पदेन समाधेयः ।** $5 \times 1 = 5$

**अ) मधुवने कः अतिथिः अभूत् ?**

**स.** दुर्वासः ।

---

**आ) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपनीः गिरः का उदाजहार ?**

**स.** द्रौपदी ।

---

**इ) कः सर्वत्र पूज्यते ?**

**स.** विद्वान्

---

**ई) सान्द्रघनावृतः ऋतुः कः?**

**स.** वर्षऋतुः ।

---

**उ) नरेन्द्रः किं चकमे ?**

**स.** काषायवासः ।

---

**X. एकेन पदेन समाधेयः ।** $5 \times 1 = 5$

**अ) धारानगराधीशः कः ?**

**स.** भोजमहाराजः ।

---

**आ) ज्ञानमात्रफला का ?**

**स.** विद्या

---

**इ) तारापीडमहाराजेन पालिता नगरी का ?**

**स.** उज्ज्यनी।

---

**ई) वृथाप्रतिज्ञाकरणं कस्य देषः ?**

**स.** अर्जुनस्य ।

---

**उ) नलेन महीतले काः निवारिताः ?**

**स.** ईतयः ।

BABY BULLET-Q AP

**XI. अधो निर्दिष्ट कथां पाठित्वा प्रशनां समाधानानि दत्त** **5 × 1 = 5**

काकः कश्चित् अपूपम् अपहृत्यः आगतः। सः अपूपं भक्षयितुं वृक्षस्य शाखायाम् उपविष्टः। अत्रान्तरे जम्बुकः कश्चित् तत्र आगतः। सः काकस्य मुखे अपूपम् अपश्यत्। तम् अपहर्तुम् जम्बुकः उपायम् अचिन्तयत्।

सः काकं प्रति एवम् अवदत् - काक! मातुल ! भवान् अतीव सुन्दरः। तव वर्णः मनोहरः । तव कण्ठस्वरः अतीव मधुरः। तव गानं श्रोतुम् इच्छामि । कृपया श्रावय इति।

काकः स्तुतिप्रियः सः आत्मानम् अतीव सुन्दरं मन्यमानः मुखं व्यादाय गातुम् आरभत। काकास्य मुखात् यदा अपूपः भूमौ पपात, तदां तं गृहीत्वा जम्बुकः पलायितः जम्बुकेन वञ्चितः काकः पश्चात् दुःखितः।

प्रश्नाः

**अ) काकः किम् अपहृत्य आगतः ?**

**सः** काकः कश्चित् अपूपम् अपहृत्य आगतः

**आ)काकः कुत्र उपविष्टः ?**

**सः** काकः वृक्षस्य शाखायाम् उपविष्टः ।

**इ) जम्बुकः काकस्य मुखे किम् अपश्यत् ?**

**सः** जम्बुकः काकस्य मुखे अपूपम् अपश्यत्

**ई) काकः कथं गातुम् आरभत ?**

**सः** काकः मुखं व्यादाय गातुम् आरभत ।

**उ) वञ्चकाः किं वदन्ति ?**

**सः** वञ्चकाः प्रियं वदन्ति ।

BABY BULLET-Q AP

**XII. त्रीणि सन्धिनामनिर्देशपूर्वकं सन्धत्त।** $3 \times 2 = 6$

अ) शरत् + चन्द्रः आ) रामस्+ टीकते इ) वाक् + ईशः

ई) वाक् + मयम् उ) शिवः + अहम् ऊ) कविः+आयाति

स. (अ) शरच्चन्द्रः - **श्चुत्वसन्धिः**

स. (आ) रामष्टीकते -**ष्टुत्वसन्धिः**

स. (इ) वागीशः - **जश्त्वसन्धिः**

स. (ई) वाङ्मयम् - **अनुनासिकसन्धिः**

स. (उ) शिवोऽहम् -**विसर्गसन्धिः**

स. (ऊ)कविरायाति - **विसर्गरेफादेशसन्धिः**

**XIII. नामनिर्देशपूर्वकं त्रीणि विघटयत।** $3 \times 2 = 6$

अ) मनश्चलति आ) तट्टीका इ) अजन्तः

इ) तन्मात्रम् उ) सोऽपि ऊ) पितुरिच्छा

स. (अ) मनस् + चलति - **श्चुत्वसन्धिः**

स. (आ) तत् + टीका - **ष्टुत्वसन्धिः**

स. (इ) अच् + अन्तः - **जश्त्वसन्धिः**

स. (ई) तत् + मात्रम् - **अनुनासिकसन्धिः**

स. (उ) सः + अपि - **विसर्गसन्धिः**

स. (ऊ)पितुः + इच्छा - **विसर्गरेफादेशसन्धिः**

BABY BULLET-Q AP

**XIV. द्वयोः शब्दयोः सविभक्तिकं रूपाणि लिखत।** 2 × 6 = 12

अ) जलमुच् आ) वाच् इ) पचत् इ) यद् (स्त्री)

अ) **चकारान्तः पुंलिङ्गः 'जलमुक्' शब्दः**(మేఘము)(Cloud)

| **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** | **विभक्तिः** |
|---|---|---|---|
| जलमुक् | जलमुचौ | जलमुचः | प्रथमाविभक्तिः |
| हे जलमुक् | हे जलमुचौ | हे जलमुचः | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |
| जलमुचम् | जलमुचौ | जलमुचः | द्वितीयाविभक्तिः |
| जलमुचा | जलमुग्भ्याम् | जलमुग्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| जलमुचे | जलमुग्भ्याम् | जलमुग्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| जलमुचः | जलमुग्भ्याम् | जलमुग्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| जलमुचः | जलमुचोः | जलमुचाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| जलमुचि | जलमुचोः | जलमुक्षु | सप्तमीविभक्तिः |

आ) **चकारान्तः स्त्रीलिङ्गः 'वाक्' शब्दः** (మాట)(Speech)

| **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** | **विभक्तिः** |
|---|---|---|---|
| वाक् | वाचौ | वाचः | प्रथमाविभक्तिः |
| हे वाक् | हे वाचौ | हे वाचः | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |
| वाचम् | वाचौ | वाचः | द्वितीयाविभक्तिः |
| वाचा | वाग्भ्याम् | वाग्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| वाचः | वाचोः | वाचाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| वाचि | वाचोः | वाक्षु | सप्तमीविभक्तिः |

BABY BULLET-Q AP

## इ) तकारान्तः नपुंसकलिङ्गः 'पचत्' शब्दः (వండుట)(to cook)

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| पचत् | पचती | पचन्ति | प्रथमाविभक्तिः |
| हे पचत् | हे पचती | हे पचन्ति | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |
| पचत् | पचती | पचन्ति | द्वितीयाविभक्तिः |
| पचता | पचद्भ्याम् | पचद्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| पचते | पचद्भ्याम् | पचद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| पचतः | पचद्भ्याम् | पचद्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| पचतः | पचतोः | पचताम् | षष्ठीविभक्तिः |
| पचति | पचतोः | पचत्सु | सप्तमीविभक्तिः |

## ई) दकारान्तः स्त्रीलिङ्गः 'यद्' शब्दः(ఎవరైతే)(Who-female)

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| या | ये | याः | प्रथमाविभक्तिः |
| याम् | ये | याः | द्वितीयाविभक्तिः |
| यया | याभ्याम् | याभिः | तृतीयाविभक्तिः |
| यस्यै | याभ्याम् | याभ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| यस्याः | याभ्याम् | याभ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| यस्याः | ययोः | यासाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| यस्याम् | ययोः | यासु | सप्तमीविभक्तिः |

BABY BULLET-Q AP

**XV. समास नामनिर्देशपूर्वकं त्रयाणां विग्रहवाक्यानि लिखत।** 3 × 2 = 6

अ) कंसकृष्णौ आ) त्रिभुवनम् इ) यथाशक्ति

ई) वृक्षमूलम् उ)अल्पवातः ऊ)उपदशाः

**स.** (अ) कंसः च कृष्णः च -द्वन्द्वसमासः

**स.** (आ) त्रयाणां भुवनानां समाहारः -द्विगुसमासः

**स.** (इ) शक्तिम् अनतिक्रम्य -अव्ययीभावसमासः

**स.** (ई) वृक्षस्य मूलम् -षष्ठीतत्पुरुषसमासः

**स.** (उ) अल्पश्च असौ वातश्च - विशेषणपूर्वपदकर्मधारयसमासः

**स.** (ऊ) दशानां समीपे ये सन्ति ते - संख्योत्तरपदबहुव्रीहिसमासः

**XVI. अधोनिर्दिष्टपट्टिकामाधारीकृत्य पञ्चसाधुवाक्यानि लिखत** 5 × 1 = 5

| | | |
|---|---|---|
| शिवः | फलं | खादामि |
| सः | पाठं | पठसि |
| अहं | चित्रं | पश्यति |
| त्वं | देवं | पिबति |
| गीता | क्षीरं | पूजयति |

1) शिवः किमर्थं गच्छति?

2) शिवः किं करोति?

3) शिवः कुत्र वसति?

4) सः किमर्थं गच्छति?

5) सः किं करोति?

6) सः कुत्र वसति?

7) सीता किमर्थं गच्छति?

8) सीता किं करोति?

9) सीता कुत्र वसति?

10)त्वं किं पिबसि

BABY BULLET-Q AP